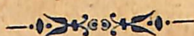
रमणियें के सोरठे



I wistled the literature as an absurd one

निर्मल

पुस्तक प्रकाशक—
राजस्थान साहित्य सदन
सुजानगढ़
सं० १९९७

पुस्तक मिलने का पता :—
श्रीरामनरायनलाल प्रजापति
सुजानगढ़ (बीकानेर)

प्रथम संस्करण

मूल्य दो आना

मुद्रक :—
पं० रामदुलारे तिवारी
दी नेशनल आर्ट प्रिण्टर्स
१६३/२, हरीसन रोड,
कलकत्ता।

दो शब्द

पुस्तिका में संगृहीत सोरठों में से अधिकांश मेरे स्वर्गीय मुनीम श्री चुन्नीलालजी प्रजापति के पौत्र श्री रामनरायनलाल को "जिसका बचपन का नाम रमणियां है" सम्बोधित करके लिखे गये हैं। लेखक ने यह सोरठे अपनी ही मनस्तुष्टि के लिये लिखे हैं अतएव लेखक इस सँग्रहकी आवश्यकता न समझता था, किन्तु कई मित्रों ने उन्हें इस रूप में देखना चाहा और उनका अनुरोध टाला न जा सका।

राजस्थानी साहित्य के अनन्य प्रेमी मेरे पूज्य भ्राता श्री सागरमलजी सेठिया बी० ए० बी० एल का भी आग्रह रहा कि मैं इन सोरठों को प्रकाश में लाऊँ अतएव इस निहोरे भी मुझे यह सोरठे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने पड़े हैं।

मानस-मन्दिर-कलकत्ता।
आश्विन शुक्ला १, सं १९९७

निर्मल

रमणिये के सोरठे



नहीं मन्दिर में वास, नहीं मसजिद में मैं बसूं
मैं भगतां रो दास, रमतो योगी रमणियाँ

काया मैलो काप,[१] स्याबण है हरि नाम की
करले बिण स्यूं साफ, रजक करै ज्यूं रमणियाँ

साधू धारयो नाम, पण है ब बाधू असल
टुकड़ां तांईं चाम, रंगै राख में रमणियाँ

अणहूंता झूठा फैल, निभ्या न निभसी ड़ोकरां
सदा जमाने गैल, रीत चालसी रमणियाँ

१. कपड़ा

रमणिये के सोरठे

कायर होय अनेक, वीर भगावै एकलो
ज्यूं ल्याली ने देख, रेवड़ भागै रमणियाँ

राखै मन में कोड़, रंग भूमी समझै सदा
रण-राता राठौड़, रण भूमी नै रमणियाँ

जको करै घन नाद, बो बरसै माड़ो घणूं
व्यर्थ करै बकवाद, रोलागारो रमणियाँ

हिम्मत रा सुख साज, हिम्मत री कीमत घणी
रींक्यां दै कुण राज, रींक मती तू रमणियाँ

रमणिये के सोरठे

भूताँ का सा भेष, धूल उड़ै मेदा बिन्या
इसड़ो म्हाँको देश, रूंख बिना को रमणियाँ

नहीं रोग को लेश, मिनख निरोगा सब घणाँ
मनवाराँ रो देश, राजपुतानूं रमणियाँ

चरखो साचो शस्त्र, मिटै गरीबी देश की
छोड़ विदेशी वस्त्र, रेजी धारो रमणियाँ

बणिक हुया बेकाम, शुद्र चढ्या है शीश पर
रजपूतां में राम, रयो न रत्ती रमणियाँ

रमणिये के सोरठे



भैंस समुख संगीत, त्यों मूरख न समझावणूं
भलो बठै ही गीत, जठै रसिक है रमणियाँ

कल राजा कल रङ्क, नर पींड़ी को मोल के
रावण राजा लङ्क, रल्यो रेत में रमणियाँ

के निर्धन धनवान, चाकर सह करतार का
धन यौवन अभिमान, रञ्च न कीजै रमणियाँ

सुख में गावो गान, क्यों दुख में रोवो भला
सुख दुख एक समान, रमो सदा ही रमणियाँ

रमणिये के सोरठे

पर निन्दा हुँशियार, मूंड़े मिठ बोला घणाँ
इसड़ा नर बदकार, रहो न साथै रमणियाँ

बीती ताहि बिसार, आगे की सुध राख तू
घबड़ा कर मझधार, रुल जाज्यो मत रमणियाँ

मत बण खाली ढोल, कर खरचो पैदा जिस्यो
राख जमां की ओल, रोकड बाकी रमणियाँ

बसन्त काल कश्मीर, गिरम में शिमलो आछो
सुख कर बीकानीर, रुत सावण की रमणियाँ

करै ऐश आराम, मिनख हुया सब पांगला
वण्या ठौड का ठाम, रही न हिम्मत रमणियाँ

कुण कीं कै है साथ, बणी का सीरी सगला
उद्यम राखो हाथ, रिणक मती तू रमणियाँ

बैल हुया बेकाम, कुण पूछै है ऊँट नै
कम खरचो आराम, रेल बणी जब रमणियां

मीठा बचन उचार, सुख पावै काया घणी
कडुआ बोल्यां खार, रङ्ग रचावै रमणियाँ

रमणिये के सोरठे

धन हो जद हा यार, मुख मीठा घण बोलणा
पड़ी गरीबी मार, रोव्यां मूँगी रमणियाँ

राख्यो चावै नाम, पर उपगारी जीव बण
नहीं तो अ धन धाम, रद्दी ज्युं है रमणियाँ

खावो राबड रोट, करो भजन करतार को
मस्त बण्यो रह्व सोट, रागड दो ज्यूं रमणियाँ

जा बिध राखै राम, ता बिध ही रहणूं भलो
चिन्ता को कै काम, रहो मौज में रमणियाँ

रमणिये के सोरठे

धीरज स्यूँ कर जेज, काम करो सगलो सफल
ऊबाँ खेजड बेज, कदै न हूवै रमणियाँ

जिण दीन्हीं है चूंच, चून भी वो ही देसी
कुण नीचो कुण ऊँच, रैयत है सब राम की

सांची लागै बात, खारी जाणै नीम ज्यूँ
उल्लू न परभात, रीस न कीजै रमणियाँ

बुरी भांग तमाखू, बुरो मद्य को सेवणूँ
नशो भजन को राख, रङ्ग राचैलो रमणियाँ

रमणिये के सोरठे



लाग्यां लातां थाप, नीच हुवै सीधा सणक
काठ होय ज्यूँ साफ, रंदो लाग्यां रमणियां

दै गरीब नै दान, यदि मिलणूँ चावै राम स्यूँ
तज झूठो कुल मान, राम मिलैगो रमणियां

धार चित्त में धीर, औगुण स्यूँ गुण टाल तूँ
पय पीवै तज नीर, राजहंस ज्यूँ रमणियां

क्यों झूठा गालो हाड, चिन्ता में गल गल मरो
देसी छप्पर फाड, रञ्ज करो किम रमणियां

रमणिये के सोरठे



मन ढीलो मत छोड़, वश राखो काठो पकड
मन है बांको घोड, रास बिना को रमणियां

सीसोदां मेवाड, कछवाहा जयपुर बसै
थली देश मरवाड़, राठौड़ी में रमणियां

बरस हुया है तीन, छांट एक बरसै नहीं
मिनख बिकल ज्यूँ मीन, रासो काँई रमणियां

जाय भलाँ ही जीव, बचन कदै छोड़ै नहीं
इसड़ा राखै हीव, राजस्थानी रमणियां

रमणिये के सोरठे



पिक-वायस एक समान, दोन्याँ में है फरक के
पर बोलो स्यूं पहचान, रङ्ग करै के रमणियां

कुण किण नै दै मार, कुण किण नै देवै जिवा
मन में राख विचार, राम रुखालो रमणियां

भूल न कीजै साथ, जका मिनख खोटा घणां
गलै पड़ै बिन बात, रस्तै बहतां रमणियां

बुरो फूट रो काम, मन में ल्यावै आंतरो
चावो सु-यश नाम, रल मिल चालो रमणियां



मन में आवे राग, बेमतलब की बात स्यूं
ज्यूं चन्दन में आग, रगड जगावै रमणियां

बिन विद्या बिन बुद्ध, पौरुष खाली के करै
कद जीतो ज्या युद्ध, रंगरूटाँ स्यूं रमणियां

लालच बुरो बलाय, लूण घलावै खीर में
दिन दिन अधिक बधाय, रबड बँधै ज्यूं रमणियां

जीभ बढ़ावै बैर, जीभ जुड़ावै प्रीत ने
राखो, चाहो खैर, रसना वश में रमणियाँ

रमणिये के सोरठे



रयाँ नीच कै सीर, हुवै भलो भी बिण जिस्यो
तिक्त हुवै नद तीर, रल सागर में रमणियाँ

एक ज्ञान की बात, हरै भरम मन को नरां
ज्यूं चमकावै रात, राकेश अकेलो रमणियां

समय बड़ी बलवान, समय करावै काम सह
सरै न कोई काम, रँज करयां स्यूं रमणियाँ

मन में घणां हुंश्यार, पूँछ न जाणै आँक की
छलकै बारम्बार, रीतो मटको रमणियाँ

रमणिये के सोरठे



होनहार सो होय, करम लिखेड़ी ना टलै
जो नर मूरख होय, रुदन मचावै रमणियाँ

अस्थिर है संसार, गरब न कीजै भूल कर
ले ज्यासी जण च्यार, रथी बणां कर रमणियां

स्वारथ में सह सीर, वक्त पड्यां बदलै नयन
ज्यूँ किरडै रो कीर, रङ्ग बणावै रमणियाँ

निर्बल कै बल राम, आ कैवत कहतां सुणी
सिमरूं बिण रो नाम, राम आसरो रमणियां

रमणिये के सोरठे

कर दे कालो रँग, ज्यूँ हाथ लगायाँ कोयलो
त्यूँ रुलपट को सङ्ग, रहो न साथै रमणियां

हुवै नाम बदनाम, इज़्ज़त का टका हुवै
जग हांसी कुल हाण, रामाण करचां स्यूँ रमणियां

चिन्ता दुःख को धाम, तन देवै सगलो गला
ज्यूं जूते को चाम, रांपी छेकै रमणियां

कहसी बात बिचार, देख समैं की चाल नै
वो ही नर हुँशियार, रेख राखसी रमणियां

रमणिये के सोरठे

आंसू हिय को हार, गालै मन के मैल नै
ज्यूँ कपड़े को खार, रीठो काटै रमणियां

ज्यूं हंसा करत जुहार, सूख्यो सरवर देख कर
त्यूं मुतलबियो संसार, राख मनां२ तू रमणियां

स्वारथ को संसार, विन स्वारथ वोलै नहीं
गिरधर है आधार, रीझ भजो थे रमणियां

वो तो है सब ठौर, मन्दिर मसजिद के धरयो
करो जठै ही गौर, रमै बठै ही रमणियां

२ मन